आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मंचासीन विद्वानगण, ज्योतिषाचार्य, एवं उपस्थित सभी सज्जनों को मेरा सादर प्रणाम।

भारतीय परंपरा में कहा गया है —

“यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे”

अर्थात् जैसा मनुष्य के भीतर है, वैसा ही ब्रह्मांड में है।

हमारे ऋषियों ने मनुष्य को केवल शरीर नहीं माना, बल्कि उसे ग्रहों, प्रकृति, ऊर्जा और चेतना से जुड़ा हुआ एक दिव्य केंद्र माना। इसी दृष्टि से उन्होंने ज्योतिष और वास्तु जैसे शास्त्रों का निर्माण किया, ताकि मानव जीवन संतुलित और स्वस्थ रह सके।

आज का विषय अत्यंत प्रासंगिक है — युवा और उनका मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य।

आज का युवा ज्ञानवान है, परन्तु चिंतित है।

सक्षम है, परन्तु अस्थिर है।

संयुक्त है, परन्तु भीतर से अकेला है।

प्रतिस्पर्धा, असफलता का भय, सामाजिक दबाव, संबंधों की जटिलता, और डिजिटल जीवन — इन सबने युवा मन को अशांत कर दिया है। परिणामस्वरूप अवसाद, तनाव, अनिद्रा, क्रोध और आत्मविश्वास की कमी तेजी से बढ़ रही है।

ऐसी स्थिति में हमें अपने शास्त्रों की ओर देखना होगा।
ज्योतिष क्या है?
ज्योतिष भय का विज्ञान नहीं, प्रकाश का विज्ञान है।
“ज्योतिष” शब्द ही कहता है — जो जीवन में प्रकाश दे।
शास्त्रों में कहा गया है —
“ज्योतिषं चक्षुरेवैतत् वेदानाम्”
अर्थात् ज्योतिष वेदों की आँख है। जन्मकुंडली व्यक्ति के मन, स्वास्थ्य, कर्मबल और संघर्षों का संकेत देती है। यदि ज्योतिषी सही समय पर सही मार्गदर्शन दे, तो वह युवा को निराशा से निकाल सकता है, उसे धैर्य, आत्मविश्वास और जीवन दृष्टि दे सकता है। ज्योतिष का उद्देश्य डराना नहीं, दिशा देना है। भविष्य बताना नहीं, जीवन सुधारना है।
अब यदि हम वास्तु की बात करें —
वास्तु केवल भवन निर्माण का नियम नहीं, बल्कि ऊर्जा संतुलन का विज्ञान है।
शास्त्रों में कहा गया है —
“वास्तुशास्त्रं जगदाधारम्”
अर्थात् वास्तु जीवन का आधार है।

जिस घर में प्रकाश, वायु, दिशा और ऊर्जा संतुलित होती है, वहां रहने वाले लोगों का मन शांत रहता है, विचार सकारात्मक होते हैं, और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

यदि युवा का अध्ययन स्थान सही दिशा में हो, सोने का स्थान संतुलित हो, और घर में पवित्रता हो — तो उसकी एकाग्रता, स्मरण शक्ति और मानसिक स्थिरता बढ़ती है।

हमारे ऋषियों ने प्रकृति और मनुष्य के संबंध को समझा था। उन्होंने जाना था कि जब मनुष्य ब्रह्मांड की लय से जुड़ता है, तभी वह स्वस्थ और सफल बनता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम ज्योतिष को अंधविश्वास से ऊपर उठाकर मार्गदर्शन का विज्ञान बनाएं।

वास्तु को व्यापार नहीं, जीवन संतुलन का साधन बनाएं।

हमें युवाओं को यह बताना होगा —

ग्रह उनके शत्रु नहीं, शिक्षक हैं।

समय उनका विरोधी नहीं, परीक्षक है।

जीवन उनका बोझ नहीं, अवसर है।

यदि ज्योतिषी युवा को आशा देगा, तो वह उठ खड़ा होगा।

यदि वास्तु उसे संतुलन देगा, तो वह स्थिर रहेगा।

और यदि संस्कृति उसे दिशा देगी, तो वह राष्ट्र का निर्माण करेगा।
अंत में मैं एक श्लोक के साथ अपनी वाणी को विराम देना चाहूँगा —
“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।”
यही हमारे शास्त्रों का संदेश है — सब स्वस्थ रहें, सब संतुलित रहें, सब सुखी रहें।
आइए, हम ज्योतिष और वास्तु के माध्यम से युवाओं को मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन दिशा प्रदान करने का संकल्प लें।
आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।
जय हिन्द।